

डॉ. रॉबर्ट चिशोल्म, आमोस: सिंह दहाड़ चुका है, कौन नहीं डरेगा? सत्र 8: आमोस 9:7-10, छलनी में हिलाया गया, आमोस 9:11-15: एक सुखद अंत

यह डॉ. रॉबर्ट चिशोल्म और आमोस की पुस्तक पर उनकी शिक्षाएँ हैं। आमोस: सिंह दहाड़ चुका है, कौन नहीं डरेगा? यह सत्र 8 है, आमोस 9:7-10, छलनी में हिलाया गया। आमोस 9:11-15, एक सुखद अंत—लहू और लोहा ऊपर आते हैं, लैवेंडर और गुलाब।

खून और लोहा मिलकर लैवेंडर और गुलाब जैसे रंग में बदल जाते हैं। खैर, आमोस पर अपने अंतिम व्याख्यान में, हम अध्याय 9, श्लोक 7 से वहीं से शुरू करेंगे जहाँ हमने छोड़ा था, और इस भाग को मैं छलनी में हिलाया हुआ कहूँगा। और जब हम इसे पढ़ेंगे तो आप समझ जाएँगे कि मैं ऐसा क्यों कह रहा हूँ।

और इसलिए प्रभु इस्राएलियों से कहते हैं, और मुझे लगता है कि यहाँ एक छोटी सी पृष्ठभूमि है। इस्राएल, वे प्रभु के वाचा के लोग हैं। उन्हें मिस्र से छुड़ाया गया था।

प्रभु सीनै पर्वत पर उनके पास आए और उन्हें व्यवस्था और वाचा दी, इसलिए वे इस तथ्य से अवगत हैं कि वे प्रभु के विशेष लोग हैं। लेकिन कभी-कभी यह एक समस्या हो सकती है, क्योंकि आप चीजों को हल्के में ले सकते हैं, और वे प्रभु के विरुद्ध विद्रोह कर रहे थे और पाप कर रहे थे, और मुझे लगता है कि शायद यह मान लिया गया होगा कि वे प्रभु के लोग होने के कारण न्याय से अछूते थे। यिर्मयाह को अपने जीवन में आगे चलकर इसी स्थिति का सामना करना पड़ा।

लोगों ने सोचा, "अच्छा, प्रभु यरूशलेम में रहता है। वह इस शहर को कभी नष्ट नहीं करेगा," और यिर्मयाह ने कहा, "हाँ, वह कर सकता है और करेगा भी।" और मुझे लगता है कि यही मानसिकता यहाँ भी मौजूद हो सकती है।

हालाँकि वे मूर्तिपूजक हैं, फिर भी वे सोच रहे होंगे कि हम खास हैं। खैर, प्रभु अब उनके नीचे से वह गलीचा खींच लेंगे। क्या तुम इस्राएलियों मेरे लिए कृशियों के समान नहीं हो, यहोवा की यही वाणी है।

कुश इथियोपिया में है। कभी-कभी इसका अनुवाद इसी तरह किया जाता है। तो हम अफ्रीका में रहने वाले लोगों की बात कर रहे हैं।

प्राचीन इस्राएल के लिए, यह उनकी ज्ञात दुनिया की परिधि पर है। इसलिए तुम मेरे लिए उन दूर के कृशियों जैसे ही हो जो अलग दिखते हैं। मेरा मतलब है, वे जानते थे कि उनका इन लोगों से कुछ संपर्क था, प्रभु की घोषणा है।

क्या मैं इस्राएलियों को मिस्र से नहीं लाया? हाँ। तुम जानते हो, तुम मेरे वाचा के लोग हो। मैं तुम्हें मिस्र से लाया हूँ, लेकिन मैं बहुत समय से लोगों को इधर-उधर करता रहा हूँ।

पलिशती लोग कफ़तोर से आए थे। वहीं से वे आए थे। और अरामी लोग कीर से आए थे।

अरामी भविष्यवाणी याद है, अध्याय एक में अरामियों के विरुद्ध भविष्यवाणी। और उनमें से एक निर्णय यह था, मैं तुम्हें कीर वापस ले जाऊँगा, और तुम्हें निर्वासित करके कीर भेज दूँगा। और हमें ठीक से पता नहीं कि कीर कहाँ है, लेकिन यही वह जगह है जहाँ से अरामी लोग आए थे।

और इसलिए प्रभु मूलतः कह रहे हैं, मैं लोगों को इधर-उधर ले जाता हूँ। मैं सभी राष्ट्रों को नियंत्रित करता हूँ। मैं कोई स्थानीय देवता नहीं हूँ।

मैं सभी राष्ट्रों पर नियंत्रण रखता हूँ, और मैं ईश्वरीय रूप से या कभी-कभी प्रत्यक्ष रूप से लोगों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाता हूँ। और इसलिए एक अर्थ में, तुम पृथ्वी के उन राष्ट्रों में से एक हो जिन पर मैं अपना नियंत्रण रखता हूँ। ज़रूरी नहीं कि तुम विशेष हो, खासकर जब तुम मूर्तिपूजक राष्ट्रों की तरह व्यवहार करते हो और मेरी वाचा की माँगों का पालन नहीं करते।

तो हाँ, मैं इस्राएलियों को मिस्र से निकाल लाया। मैं पलिशतियों को कफ़तोर से निकाल कर यहाँ लाया। मैं अरामियों को कीर से निकाल लाया।

और कुछ मायनों में, तुम कुशियों से अलग नहीं हो। और मेरा तुम पर संप्रभु नियंत्रण है। और इसलिए इस नींव के साथ, तुम इस बात पर भरोसा नहीं कर सकते कि तुम मेरे विशेष अनुबंधित लोग हो और यह उम्मीद नहीं कर सकते कि जब तुम गलत काम करोगे तो तुम्हें न्याय से बचाया जाएगा।

निश्चय ही प्रभु यहोवा की दृष्टि उस पापी राज्य पर लगी है। मैं उसे पृथ्वी के ऊपर से मिटा दूँगा, परन्तु याकूब के वंश को पूरी तरह से नष्ट नहीं करूँगा। इसलिए मैं उसे पृथ्वी के ऊपर से मिटा दूँगा।

यह सुनने में बहुत कठोर लगता है, लेकिन फिर वह इसे स्पष्ट करते हैं, "लेकिन मैं इसे पूरी तरह से नष्ट नहीं करूँगा।" और हिब्रू में, वह एक ज़ोरदार रचना का प्रयोग करते हैं, "हश्मिद, हश्मिद, नष्ट करते हुए, मैं नष्ट नहीं करूँगा।" और वह इसे नकारते हैं।

तो यह स्पष्ट है कि ऐसा नहीं होगा। मैं इसे पूरी तरह से नष्ट नहीं करूँगा। याकूब के वंशज यहोवा की वाणी है।

तो प्रभु यहाँ घोषणा कर रहे हैं कि एक अवशेष अवश्य होगा। और यह पुराने नियम का एक महत्वपूर्ण विषय है। दरअसल, कई साल पहले गेरहार्ड हेज़ल नाम के एक विद्वान थे, जिन्होंने पुराने नियम में अवशेष के विषय पर एक किताब लिखी थी।

और इसलिए, हाँ, परमेश्वर हमेशा एक अवशेष को सुरक्षित रखेगा। और यह क्रम जलप्रलय तक जाता है, जहाँ प्रभु ने कहा था कि वह आएगा और पृथ्वी का नाश करेगा। लेकिन फिर उत्पत्ति छह में, नूह नाम का एक व्यक्ति था, जो प्रभु के पीछे चल रहा था।

बस एक अविश्वसनीय अल्पसंख्यक। लेकिन प्रभु नूह पर ध्यान देते हैं, और नूह की जान बख्श देते हैं। और एक तरह से, एक सामूहिक, सामूहिक रूप से, नूह के परिवार को उसके साथ किस तरह बख्शा जाता है, यह तो तय है।

तो विश्वास का एक अंश हमेशा बचा रहता है। प्रभु धर्मी लोगों को यूँ ही मिटा नहीं देता। हबक्कूक की किताब इसी बारे में है।

हबक्कूक, हमने पिछले व्याख्यान में इसका ज़िक्र किया था, इसलिए मैं इस पर ज़्यादा विस्तार से नहीं लिखूँगा, लेकिन हबक्कूक इसी तरह की बात कर रहा है, जहाँ न्याय आने वाला है, और हबक्कूक बहुत चिंतित है। लेकिन प्रभु उसे आश्चस्त करते हैं कि, नहीं, मैं हमेशा धर्मियों पर नज़र रखता हूँ, और अपने उद्देश्यों को पूरा करने के लिए धर्मियों के एक समूह को बचाए रखूँगा। और इस प्रकार, प्रभु का यह न्याय भाषण यहाँ एक तरह से चरमोत्कर्ष पर पहुँच रहा है।

यह एक बहुत ही कठोर न्याय है, लेकिन फिर प्रभु अवशेष का विषय जोड़ते हैं, और यह अध्याय नौ, पद 11 में आने वाले सुखद अंत तक एक छोटा सा पुल बनाएगा। क्योंकि मैं आज्ञा दूँगा, और इस्राएल के लोगों को राष्ट्रों के बीच हिला दूँगा। इसलिए यह एक निर्वासन होगा।

चूँकि अनाज को छलनी में हिलाया जाता है, इसलिए एक भी कंकड़ ज़मीन पर नहीं पहुँचता। इसलिए हमें ठीक-ठीक पता नहीं है कि यह छलनी कैसी थी। क्या यह अनाज को इकट्ठा करेगी और भूसा नीचे जाएगा, या इसका उल्टा होगा? लेकिन किसी भी तरह, एक छलनी का इस्तेमाल तो होगा ही, और छलनी अनाज को भूसे से अलग करेगी, चाहे हम इसे कैसे भी कल्पना करें।

और धर्मी ही बचेंगे, क्योंकि पद 10 में ध्यान दीजिए, मेरे लोगों में से सभी पापी, तलवार से मारे जाएँगे। जो लोग कहते हैं, "विपत्ति हम पर नहीं पड़ेगी, न ही हम पर आएगी," और यही वह मानसिकता है जिसके कारण प्रभु ने पद 7 में कहा, "तुम इस्राएली मेरे लिए कूशियों के समान हो। मैं उन्हें इधर-उधर कर सकता हूँ, मैं उनका न्याय कर सकता हूँ, और मैं तुम्हारे साथ भी ऐसा ही करूँगा।"

आप न्याय से अछूते नहीं रहेंगे। और देखिए, पद 10 के अंत में उनके शब्दों का उद्धरण दिखाता है कि वे इसी तरह सोच रहे थे। इसलिए प्रभु उन पर न्याय करने जा रहे हैं।

उनकी वाचाबद्ध जातियाँ उन्हें इससे बचा नहीं पाएँगी, लेकिन प्रभु एक अवशेष को सुरक्षित रखेंगे। इसलिए यदि मेरे लोगों में से सभी पापी मरेंगे, तो इसका अर्थ है कि उनके लोगों में से गैर-पापी भी सुरक्षित रहेंगे। छलनी दोनों के बीच अंतर बताएगी।

और इसलिए पुराने नियम और बाइबल में यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण विषय है। परमेश्वर एक अवशेष को सुरक्षित रखता है। और आप इसे विभिन्न रूपों में देखते हैं।

भजन 37 में, प्रभु देश पर न्याय करने जा रहे हैं, और जब धुआँ छँट जाएगा और न्याय समाप्त हो जाएगा, तो धर्मी लोग देश में बस जाएँगे। हम इसे यहाँ, वहाँ और हर जगह देखते हैं। और यह जानकर बहुत उत्साह होता है, क्योंकि हम एक बहुत ही अनिश्चित दुनिया में रहते हैं, एक ऐसी दुनिया जहाँ मुझे विश्वास करना पड़ता है कि परमेश्वर न्याय कर रहे हैं।

हम पक्के तौर पर नहीं जान सकते, हमारा कोई भविष्यवक्ता नहीं है, लेकिन मुझे पूरा यकीन है कि परमेश्वर अभी भी अपनी दुनिया में दखल दे रहा है, और अभी भी न्याय कर रहा है। लेकिन हमें इससे डरने की ज़रूरत नहीं है। हम प्रभु यीशु मसीह में सुरक्षित हैं।

वह हमारी रक्षा करता है, वह हमें इस बात से बचाता है कि हम कष्ट सहें। हबक्कूक को कष्ट सहने की उम्मीद थी, लेकिन अंततः कोई भी चीज़ हमें मसीह यीशु में परमेश्वर के प्रेम से अलग नहीं कर सकती। तो यह एक सकारात्मक मोड़ है जो यहाँ घटित होता है, और वे विद्वान जो यह तर्क देना चाहते हैं कि पद 11 से 15 आमोस से नहीं आए हैं, क्योंकि आमोस न्याय और उद्धार दोनों के बारे में एक साथ नहीं सोच सकता था। वे 9 और 10 में जो हो रहा है उसे समझने में चूक रहे हैं।

यहाँ एक संकेत दिया गया है, एक सकारात्मक संकेत। लेकिन उस सुखद अंत में उतरने से पहले, आइए इस खंड, अध्याय 8 पद 4 से अध्याय 9 पद 10 तक के सिद्धांतों का सारांश देखें। यहाँ हम परमेश्वर के न्याय के बारे में सीखते हैं, जो दुखद रूप से कड़वा है।

कुछ लोगों के लिए यह इकलौती संतान को खोने जैसा होगा। उचित, यह उचित होगा, सज़ा अपराध के अनुरूप होगी, यह अपरिहार्य होगा, और यह भेदभावपूर्ण होगा, और यही इसकी सकारात्मक विशेषता है। यह भेदभावपूर्ण होगा।

तो चलिए किताब के आखिरी हिस्से की ओर बढ़ते हैं, जिसका शीर्षक मैंने "अ हैप्पी एंडिंग" रखा है, और मेरा उपशीर्षक भी है, "ब्लड एंड आयरन कम अप, लैवेंडर एंड रोज़ेज़"। यह बात मुझे पुराने नियम के एक प्रसिद्ध विद्वान, 19वीं सदी के विद्वान, जूलियस वेलहाउसन से मिली है, जिन्होंने तर्क दिया था कि आमोस का अंत आमोस से नहीं हो सकता, क्योंकि पूरी किताब में खून और लोहा, न्याय, खून और लोहा, और अब लैवेंडर और गुलाब, एक सुखद अंत है। दरअसल, इस बात का खंडन करना बहुत आसान है।

मैं वेलहाउसन और उन लोगों से पूरी तरह असहमत हूँ जो इस बात से इनकार करते हैं कि आमोस ने यह लिखा होगा, और मैं उनसे इसलिए असहमत हूँ क्योंकि हाँ, यह हमारी मौजूदा स्थिति से बिल्कुल अलग है। हमारे पास न्याय और अब उद्धार है, लेकिन मैं इसे भविष्यवक्ताओं में कहीं और देखता हूँ। आमोस इस दृष्टिकोण से अलग हैं कि यहाँ तक तो न्याय ही है, और फिर अंत में पाँच पद हैं, और शायद पद 9 और 10 में आने वाले कुछ बेहतर होने का थोड़ा सा संकेत है।

यह उस चाल को आगे बढ़ाता है, लेकिन दूसरे भविष्यवक्ताओं ने भी ऐसा किया है। मैंने इन पैनलबद्ध संरचनाओं के बारे में बात की है: न्याय, उद्धार। उदाहरण के लिए, यशायाह, यशायाह

1 से 12, यशायाह के पहले भाग में, न्याय का भारी ज़िक्र है, अध्याय 2 और अध्याय 4 में थोड़ा सा उद्धार दिया गया है, लेकिन उस भाग के अंत तक, यह पूरी तरह से उद्धार है।

हम न्याय से मुक्ति की ओर बढ़ते हैं। आप अध्याय 13 से 27, 28 से 35 में भी यही पैटर्न देखते हैं, जो कि प्रमुख भाग हैं, और फिर जब आप अध्याय 40 से 66 तक आते हैं, तो हाँ, वह उस न्याय के बारे में बात कर रहे हैं जो हो चुका है। वह भविष्य के निर्वासितों को संबोधित कर रहे हैं।

वह खुद को समय से आगे की ओर प्रक्षेपित कर रहा है और उनसे ऐसे बात कर रहा है जैसे वह वहाँ मौजूद हो, लेकिन वह न्याय के बारे में ऐसे बात करता है जैसे कुछ घटित हो चुका हो, लेकिन यह पुस्तक का एक बहुत ही सकारात्मक भाग है। अपने लोगों के लिए प्रभु के अंतिम उद्देश्य पूरे होंगे। आप होशे को पढ़ें, यह आगे-पीछे होता है, न्याय, उद्धार, न्याय, उद्धार।

किसी भी भविष्यवक्ता, मीका, को चुन लीजिए, आपको वही पैटर्न दिखाई देगा। फिर से, अमोस अद्वितीय है क्योंकि जहाँ आप निर्णय दे रहे हैं, वह उतना जटिल नहीं है, यह किसी पेंडुलम की तरह आगे-पीछे नहीं हिल रहा है, न्याय, उद्धार, न्याय, उद्धार। यह बस न्याय और फिर उद्धार है, और यही बात कुछ लोगों को परेशान करती है।

यह बात मुझे सचमुच परेशान नहीं करती। एक और सिद्धांत जो मुझे भविष्यवक्ताओं और बाइबल में मिलता है, वह यह है कि विडंबना यह है कि न्याय ही अक्सर मुक्ति का मार्ग होता है। हालात सुधरने से पहले बिगड़ते ज़रूर हैं।

परमेश्वर के न्याय में शुद्धिकरण का गुण होता है, और इसलिए प्रभु न्याय इसलिए करते हैं ताकि वे एक धर्मी अवशेष बना सकें, और उस धर्मी अवशेष का उपयोग अपने उद्देश्यों को पूरा करने के लिए कर सकें। इसलिए न्याय शुद्धिकरण है, और इसलिए यह उद्धार के साथ-साथ चलता है। ये दोनों विचार परस्पर विरोधी नहीं हैं।

ये दोनों बातें एक साथ चलती हैं। न्याय मोक्ष में योगदान देता है। मेरा मतलब है, इसका सबसे बड़ा उदाहरण यीशु हैं।

उसे परमेश्वर का न्याय, हमारे पापों की सज़ा, भुगतनी पड़ती है। लेकिन इससे क्या मिलता है? विडंबना यह है कि इससे मुक्ति मिलती है। और इसीलिए पुराने नियम में ये विषय जुड़े हुए हैं, और इसके अलावा, अमोस बस मूसा पर ही आधारित है।

वह मूसा और वास्तव में 1 राजा 8 में सुलैमान के बारे में बता रहे हैं, लेकिन आइए व्यवस्थाविवरण अध्याय 30, पद 1 से 10 तक चलते हैं। मैं अन्य अंशों को उतना नहीं पढ़ रहा हूँ, लेकिन मैं इसे पढ़ना चाहता हूँ क्योंकि मुझे लगता है कि यह बहुत महत्वपूर्ण है। अमोस के साथ हम जो कर रहे हैं, उसके अलावा, भविष्यवक्ताओं को समग्र रूप से समझना बहुत ज़रूरी है।

और जब आप न्याय-मुक्ति का सामना करते हैं, और यह थोड़ा विरोधाभासी लग सकता है, जैसे कि वह आगे-पीछे उछल रहा हो, तो यह सब मूसा की कही बातों पर आधारित है। अब, यह समझ लीजिए कि बाइबल के बहुत से आलोचक यह नहीं मानते कि मूसा ने व्यवस्थाविवरण 30

लिखा था। वे इसे कई भविष्यवक्ताओं के बाद रखेंगे, लेकिन जैसा कि पाठ में है, मूसा यही कहता है।

वह लोगों से परमेश्वर की आज्ञा मानने का आग्रह करता रहा है। उसने अध्याय 28 में आने वाले न्याय के बारे में उन्हें चेतावनी दी है, और मूसा ने जो कहा, वह यहाँ दिया गया है। यह आमोस को समझने का आधार है।

यह भविष्यवक्ताओं को समझने का आधार है। जब ये सारे आशीर्वाद और शाप जो मैंने तुम्हारे सामने रखे हैं, तुम पर आएँगे, और तुम उन्हें अपने मन में रखोगे जहाँ भी तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें राष्ट्रों में फैलाएगा, तो ऐसा लगता है कि मूसा, जो इन लोगों के साथ रह चुका है, जानता है कि शाप उस पर आने वाले हैं। प्रभु उन्हें आशीर्वाद तो देगा, लेकिन अंततः वे उस स्थिति में पहुँच जाएँगे जहाँ प्रभु को उन्हें निर्वासन में भेजना पड़ेगा।

जब वह दिन आएगा, और आप निर्वासन में होंगे, और प्रभु की कही बातों को हृदय से लगाएँगे, और जब आप और आपके बच्चे अपने प्रभु परमेश्वर के पास लौटेंगे, तो ध्यान दें कि पश्चात्ताप ही आधार है। आप स्वामित्व, मानवीय ज़िम्मेदारी ले रहे हैं। बाइबल ईश्वरीय संप्रभुता और मानवीय ज़िम्मेदारी को पूर्ण संतुलन में रखती है, और प्रभु यहाँ यह नहीं कह रहे हैं कि मैं तुम्हारा हृदय बदल दूँगा।

अभी नहीं। वे उस मुकाम पर पहुँच गए हैं जहाँ उन्हें अपने पापों का पश्चात्ताप है, और वे अपने प्रभु परमेश्वर के पास लौट आए हैं, और वे पूरे मन और पूरे प्राण से उसकी आज्ञा मानने लगे हैं, जैसा कि मैं आज तुम्हें आज्ञा देता हूँ। तो यहाँ एक आध्यात्मिक परिवर्तन हो रहा है, और मेरा मानना है कि यह परमेश्वर की आत्मा के कार्य के बिना संभव नहीं है।

मैं यह बात शास्त्रों से जानता हूँ, लेकिन परमेश्वर उन पर यह थोप नहीं रहा है। उसकी आत्मा उनके हृदय में कार्य कर रही है, और वे सकारात्मक प्रतिक्रिया दे रहे हैं। इसलिए यहाँ मानवीय ज़िम्मेदारी बहुत मज़बूत और बहुत बुनियादी है।

तब तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारा भाग्य बदल देगा या तुम्हारे हालात बदल देगा। किस्मत थोड़ी भ्रामक हो सकती है। तुम पैसे की क्या बात कर रहे हो? नहीं, वही तो तुम्हारे हालात बदल देगा, तुम पर दया करेगा और तुम्हें उन सब देशों से फिर से इकट्ठा करेगा जहाँ उसने तुम्हें बिखेरा था।

चाहे तुम्हें स्वर्ग के सबसे दूर देश में भी निर्वासित कर दिया गया हो, तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें वहाँ से इकट्ठा करेगा और वापस ले आएगा। वह तुम्हें उस देश में ले जाएगा जो तुम्हारे पूर्वजों का था, और तुम उस पर अधिकार कर लोगे। यह अब्राहम के उस वादे की ओर इशारा है, जो यहाँ आधारभूत है।

वह तुम्हें तुम्हारे पूर्वजों से भी ज़्यादा समृद्ध और संख्या में समृद्ध बनाएगा। और यहीं पर प्रभु आध्यात्मिक रूप से एक चमत्कारी कार्य करता है, क्योंकि हम कभी भी अपनी आज्ञाकारिता को बनाए नहीं रख पाए। तो ध्यान दीजिए कि वह क्या करने जा रहा है।

तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे और तुम्हारे वंशजों के हृदयों का खतना करेगा ताकि तुम उससे अपने पूरे मन और पूरे प्राण से प्रेम करो और जीवित रहो। यिर्मयाह इसके बारे में बात करता है, और पुराना नियम इसे नई वाचा कहता है, जहाँ परमेश्वर आते हैं और अपने लोगों को उनके पश्चाताप के साथ परिवर्तित करते हैं। इसलिए, मानवीय ज़िम्मेदारी परमेश्वर के इस कार्य के लिए उत्प्रेरक है, और फिर हमारे पास लोगों का निर्माण करने वाली दिव्य संप्रभुता है।

और यिर्मयाह कहता है कि तुम्हें एक-दूसरे को यहोवा की आज्ञा मानने के लिए उकसाने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी, क्योंकि उस समय हर कोई यहोवा की आज्ञा मानेगा। तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे उन शत्रुओं पर ये सारे शाप डालेगा जो तुमसे घृणा करते हैं और तुम्हें सताते हैं। तुम फिर से यहोवा की आज्ञा मानोगे और उसकी सारी आज्ञाओं का पालन करोगे जो मैं आज तुम्हें दे रहा हूँ।

तब तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे सब कामों में, तेरे गर्भ के फल, तेरे पशुओं के बच्चों और तेरी भूमि की उपज में तुझे सर्वोपरि करेगा। ये सब शाप उलट दिए जाएँगे। यदि तू अपने परमेश्वर यहोवा की बात मानेगा, और उसकी आज्ञाओं और विधियों को जो इस व्यवस्था की पुस्तक में लिखी हैं, मानेगा, और अपने पूरे मन और पूरे प्राण से अपने परमेश्वर यहोवा की ओर फिरेगा, तो यहोवा फिर तुझ पर प्रसन्न होगा और तुझे समृद्ध करेगा, जैसे वह तेरे पूर्वजों पर प्रसन्न हुआ था।

यह लगभग वहीं खत्म होता है जहाँ से उन्होंने शुरुआत की थी। तो इसकी शुरुआत लोगों द्वारा यह स्वीकार करने से होती है कि उन्हें ईश्वर की ओर से दंड मिला है। एक धर्मी अवशेष अवश्य होगा, और मुझे लगता है कि ईश्वर उन्हें ऐसा करने के लिए प्रेरित तो कर रहा है, लेकिन उन्हें ऐसा करने के लिए मजबूर नहीं कर रहा है।

वे ज़िम्मेदार हैं, और वे परमेश्वर के पास वापस आते हैं, और परमेश्वर वहाँ से आगे की ज़िम्मेदारी लेता है। वह उन्हें वादा किए गए देश में वापस लाता है, उस देश में जिसका वादा उसने कुलपिताओं से किया था, और वह उन्हें बदल देता है। और यही वह बात है जिसका वर्णन आमोस यहाँ कर रहा है।

वह उस दिन की कल्पना कर रहा है जब मूसा का वादा पूरा होगा। तो आइए इस पर विस्तार से चर्चा करें। उस दिन, यानी आज के दिन, जब मैंने छलनी से बचे हुए लोगों को बचा लिया है, पापियों को नष्ट कर दिया है, अपने न्याय के द्वारा शुद्ध कर दिया है, और अब जो पापी नहीं हैं, जो मेरे पीछे चल रहे हैं, उन्हें बचा लिया है।

उस दिन, यह होगा: मैं दाऊद के गिरे हुए घर को फिर से बनाऊँगा। मैं उसकी टूटी हुई दीवारों की मरम्मत करूँगा, उसके खंडहरों को फिर से बनाऊँगा, और उसे पहले जैसा बना दूँगा।

कुछ लोग कहेंगे, देखो, यह आमोस नहीं हो सकता। यह उस समय की बात कर रहा है जब दाऊद का राज्य नहीं रहा। अगर आप इसे अलग से देखें तो यह आमोस हो सकता है, लेकिन ऐसा होना ज़रूरी नहीं है।

दाऊद के सिंहासन का पतन कठिन समय से गुज़र रहा था। दाऊद और सुलैमान के युगों के बाद, यहूदा कभी भी उतना शक्तिशाली नहीं रहा जितना पहले था, और इसलिए यह टूटी दीवारों और खंडहरों वाला एक आश्रय-सा प्रतीत हो सकता था, और प्रभु मूलतः कह रहे हैं, "मैं दाऊद के साम्राज्य को उसके पूर्व गौरव पर पुनर्जीवित करूँगा।" यह ज़रूरी नहीं कि वह दाऊद के राज्य के अंत के बाद ही कुछ कहे।

हो सकता है कि वह निर्वासन-पूर्व काल में यह कह रहा हो, ताकि वे एदोम के बचे हुए लोगों और मेरे नाम से पुकारे जाने वाले सभी राष्ट्रों पर अधिकार कर सकें, यहोवा की यही वाणी है जो इन कार्यों को पूरा करेगा। अतः दाऊद की वाचा पूरी होने वाली है। परमेश्वर ने दाऊद से इसी प्रकार के वादे किए थे, और वे वादे पूरे होने वाले हैं, और ऐसे अन्य अंश भी हैं जो उस समय के बारे में बात करते हैं जब इस्राएल भविष्य में अपने शत्रुओं को पराजित करेगा।

मुझे पूरा यकीन नहीं है कि हमें इसे स्वीकार करना ही होगा। यह बात उन्हें प्रभावित करेगी, क्योंकि उनके आस-पास कई शत्रुतापूर्ण राष्ट्र हैं, लेकिन अगर आप इसे बाइबल के अन्य अंशों के साथ जोड़कर देखें, तो मुझे पूरा यकीन नहीं है कि कोई युद्ध होने वाला है। दाऊद एदोमियों, अम्मोनियों वगैरह पर विजय प्राप्त करने वाला है।

मुझे यकीन भी नहीं है कि वे लोग वहाँ होंगे भी या नहीं। इसलिए मुझे लगता है कि इसकी एक अनिवार्य पूर्ति होगी, जो कि दाऊद का राज्य है। दाऊद के अधीन इस्राएल एक बार फिर वह मज़बूत और शक्तिशाली राष्ट्र बनेगा जैसा परमेश्वर ने चाहा था।

अपने आस-पास के देशों से ज़्यादा ताकतवर। लेकिन इसमें युद्ध की छवि का इस्तेमाल किया गया है। हमें बस इंतज़ार करना होगा और देखना होगा कि आगे क्या होता है।

हो सकता है कि विरोध का सामना करना पड़े, जिसे दबाना ज़रूरी होगा। यशायाह अध्याय 11 में भी इसका वर्णन करता है, क्योंकि दाऊद का साम्राज्य पुनर्स्थापित होने वाला है। दाऊद ने शत्रु राष्ट्रों को हराकर दाऊद का साम्राज्य बनाया था, और इसलिए स्वाभाविक रूप से, जब वे भविष्य को दाऊद से किए गए परमेश्वर के वादे की पूर्ति, दाऊद के नवीनीकरण के रूप में वर्णित करते हैं, तो दाऊद का साम्राज्य वापस आने वाला है।

वे दुश्मनों को हराने के संदर्भ में इस बारे में बात करेंगे। हमें बस इंतज़ार करना होगा और देखना होगा। और हाँ, मुझे पूरा विश्वास है कि नया दाऊद, आदर्श दाऊद, दाऊद का वंशज, यीशु, धरती पर राज करेगा।

और मुझे लगता है कि मैं रोमियों 9 से 11 तक इसका बचाव कर सकता हूँ। मैं यहीं हूँ। मुझे एहसास है कि कुछ और लोग भी हैं जो कहना चाहते हैं कि यह चर्च के बारे में बात कर रहा है।

मुझे नहीं लगता कि ऐसा होगा। एक राज्य स्थापित होगा। यशायाह अध्याय 11 में इसके बारे में बात करता है।

और दाऊद ही नया दाऊद है जो इस पर राज करेगा। और अगर उसे शुरुआत में किसी मोड़ पर दुश्मनों को हराना पड़े, तो वह भी करे। शायद यही हम प्रकाशितवाक्य में देखते हैं।

मुझे यकीन नहीं है, लेकिन परमेश्वर दाऊद से किए अपने वादे पर खरा उतरेगा। ऐसा ही लगता है। वह दाऊद के राजवंश को फिर से स्थापित करेगा।

यह यीशु के ज़रिए होगा, और यीशु राष्ट्रों पर शासन करेगा। और उन राष्ट्रों पर ध्यान दीजिए जो मेरा नाम धारण करते हैं। क्या यह दिलचस्प नहीं है? जब आप नाम धारण करते हैं, तो यह इब्रानी में होता है; यह उन सभी राष्ट्रों का प्रतिनिधित्व करता है जिन पर मेरा नाम पुकारा जाता है।

पुराने नियम में जब किसी चीज़ पर नाम पुकारा जाता है, तो इसका मतलब है कि वह आपकी है। यह आपके स्वामित्व के लिए एक मुहावरा है। और इसलिए प्रभु उन सभी राष्ट्रों से कह रहे हैं जिन पर अभी मेरा नाम पुकारा जाता है।

यह उस बात से मेल खाता है जो हमने किताब की शुरुआत में देखी थी, जहाँ प्रभु आते हैं और मूल रूप से कहते हैं, "ये राष्ट्र मेरे प्रति उत्तरदायी हैं। मुझे लगता है कि नूह की वाचा के ज़रिए, वे मेरे प्रति उत्तरदायी हैं। मैं उनका स्वामी हूँ।"

वे मेरे हैं। और मैं उन्हें उनके विद्रोही कार्यों, नूह के आदेश के उल्लंघन के लिए जवाबदेह ठहराऊँगा, जहाँ आप अपने साथी मनुष्यों के प्रति सम्मान दिखाते हैं क्योंकि वे ईश्वर की छवि हैं। और इसलिए यह उस बात से मेल खाता है जो किताब की शुरुआत में कही गई थी।

वह कोई स्थानीय देवता नहीं है। सभी राष्ट्र उसके नाम से जाने जाते हैं, और वह किसी दिन दाऊद के सिंहासन के इस पुनरुत्थान के माध्यम से सीधे उन सभी पर अपना राज्य फैलाएगा। इसलिए, हममें से जो लोग पूर्व-सहस्राब्दी के हैं, हम इसे यीशु के राज्य के संदर्भ में देखते हैं, जहाँ वह भविष्य में पृथ्वी पर शासन करेगा और दाऊद के आदर्श को पूरा करेगा।

लेकिन भविष्यवक्ता यहीं समाप्त नहीं होता। उसने एक तरह से घोषणा की है कि प्रभु हस्तक्षेप करेंगे और दाऊद के राज्य का पुनरुत्थान करेंगे। अब वह वर्णन कर रहा है कि वह काल कैसा होगा।

क्लाउस वेस्टरमैन, जिन्होंने इन भविष्यसूचक भाषण शैलियों का बहुत ध्यानपूर्वक अध्ययन किया है, इसे उद्धार का चित्रण कहेंगे। यह उद्धार की घोषणा नहीं है। उद्धार की घोषणा कहती है कि प्रभु आपको मुक्ति दिलाएँगे, और वह ऐसा इस प्रकार करेंगे।

यह मानते हुए कि यह पहले ही हो चुका है, और लोग अपने देश में वापस आ गए हैं और उन आशीषों का अनुभव कर रहे हैं जिनके बारे में मूसा ने कहा था कि वे अनुभव करेंगे। और इसलिए यह इस बात का चित्रण है कि इस समय दुनिया कैसी होगी या इज़राइल कैसा होगा। तो आइए इसे पढ़ते हैं।

यहोवा की यह वाणी है, ऐसे दिन आ रहे हैं जब कटाई करने वाले को हल चलाने वाला और बोने वाले को अंगूर रौंदने वाले से आगे निकल जाएगा। नया दाखमधु, और यह दाखमधु है, नया दाखमधु, माफ़ कीजिए, यह अंगूर का रस नहीं है, यह नया दाखमधु है, पहाड़ों से टपकेगा और सब पहाड़ियों से बहेगा, और मैं अपनी प्रजा इस्राएल को बंधुआई से वापस ले आऊँगा। तो यहाँ यह क्रम उल्टा है।

इससे पहले कि यह स्थिति बने, उन्हें वापस आना होगा, लेकिन यह सब इसलिए होगा क्योंकि मैं अपनी प्रजा इस्राएल को निर्वासन से वापस लाऊँगा। वे उजड़े हुए शहरों का पुनर्निर्माण करेंगे और उनमें बसेंगे। वे अंगूर के बाग लगाएँगे और उनकी दाखमधु पिएँगे।

वे बाग उगाएँगे और अपना भोजन खाएँगे। मैं इस्राएल को उनकी अपनी ज़मीन पर रोपूँगा, ताकि वे फिर कभी न उखड़ें। जहाँ हम खेती, बोआई और कटाई की बात कर रहे हैं, वहाँ प्रभु पीछे हटकर कहते हैं, "मैं इस्राएल को रोपूँगा।"

मैं खुद कुछ पौधे लगाने जा रहा हूँ। वे पौधे लगाएँगे और कटाई करेंगे क्योंकि वे मेरी दी हुई उर्वरता और मेरे द्वारा दिए गए आशीर्वाद का अनुभव करेंगे, लेकिन मैं उन्हें उनकी अपनी ज़मीन पर ही रोपूँगा, ताकि वे उस ज़मीन से फिर कभी न उखड़ें जो मैंने उन्हें दी है, तुम्हारे परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है। मैं कटाई और उस सब काम पर वापस जाना चाहता हूँ।

हमें कृषि चक्र की अपनी समझ की समीक्षा करने की ज़रूरत है, और मैंने कहीं और कहा है कि इस्राएल यहाँ प्रभु की कृपा का आनंद ले रहा है, और वापस लौटकर अपने उजड़े हुए शहरों का पुनर्निर्माण करके, लोग अपनी फ़सलें बोएँगे और भरपूर फ़सल का आनंद लेंगे। यह एक अतिशयोक्ति है। खैर, हमें इंतज़ार करना होगा और देखना होगा, लेकिन मुझे तो यह अतिशयोक्ति लग रही है। ज़ोर देने के लिए अतिशयोक्ति के साथ, प्रभु ने एक ऐसे समय की कल्पना की है जब फ़सलें इतनी ज़्यादा होंगी कि अप्रैल और मई में काम करने वाले कटाई करने वाले, जौ की फ़सल, गेहूँ की फ़सल, हाँ, अप्रैल और मई में काम करने वाले कटाई करने वाले तब भी फ़सल काट रहे होंगे जब हल चलाने वाले, जो आमतौर पर गेजर कैलेंडर के अनुसार अक्टूबर-नवंबर में काम करते हैं, अपना काम शुरू करने के लिए तैयार हो रहे होंगे, और फ़सल अभी आई भी नहीं होगी।

पिछली फ़सल अभी तक कटी भी नहीं है, और जुताई शुरू होने से पहले हार्वेस्टर पूरी फ़सल नहीं काट पा रहे हैं। यही स्थिति है। अंगूर की फ़सल, जो आमतौर पर अगस्त-सितंबर में होती है, नवंबर-दिसंबर में रोपाई के मौसम तक अभी भी चल रही होगी।

तो, समझे? आपके पास सामान्य कृषि चक्र है। बुवाई, बारिश, कटाई, ईश्वर की कृपा से सब कुछ गड़बड़ा जाएगा। इतनी सारी फ़सलें और इतने सारे अंगूर होंगे कि वे इसे ठीक से उगा ही नहीं पाएँगे।

यही यहाँ दिखाया जा रहा है, और फिर शराब इतनी ज़्यादा होगी कि वह हौज़ों से बाहर निकलकर पहाड़ियों से नीचे गिरेगी। याद रखें, वे अंगूर लाते हैं, फिर उन्हें हौज़ में डालते हैं, और

उन्हें कुचलना शुरू कर देते हैं या कोई भी तरीका अपनाते हैं, और जैसे ही अंगूर का छिलका टूटता है, वह किण्वन करना शुरू कर देता है, और इसलिए यह स्वाभाविक है, वह किण्वन करेगा। मुझे नहीं लगता कि इसमें 14% से ज़्यादा अल्कोहल होगा।

मैंने यही पढ़ा था, प्राचीन इज़राइल में अंगूर की खेती पर हार्वर्ड विश्वविद्यालय के एक शोध प्रबंध में। मुझे लगता है कि ये वही आँकड़े थे जो केरी वॉल्श ने दिए थे, लेकिन किसी भी हालत में, अंगूरों को निचोड़ते समय घड़े अंगूरों से इतने लदे होंगे कि वे पहाड़ियों से नीचे बहकर घड़ों से भर जाएँगे। यही तस्वीर यहाँ दी गई है, और यह प्रचुर आशीर्वाद की तस्वीर है, और मुझे लगता है, आप जानते हैं, हम कह सकते हैं, ठीक है, जब तक कृषि के तरीके में कोई आमूल-चूल परिवर्तन नहीं होंगे, ऐसा लगता है कि यह ज़ोर देने के लिए अतिशयोक्ति है, और बाइबल और भविष्यवक्ता अक्सर अतिशयोक्ति का प्रयोग करते हैं, और इसका मतलब यह नहीं है कि यह गलत है या ऐसा कुछ।

यह बस इस बात पर ज़ोर दे रहा है कि फसल कितनी भरपूर होगी, और जब वह कहता है, "मैं इस्राएल को उनकी अपनी ज़मीन पर रोपूँगा, और उन्हें उस ज़मीन से फिर कभी नहीं उखाड़ा जाएगा जो मैंने उन्हें दी है," तो आप उत्पत्ति में वापस जाएँ, और यह क्रिया, नातान, जिसका अर्थ इब्रानी में देना है, ज़मीन के लिए इस्तेमाल की गई है, और यह अब्राहम के वादे में भी दिखाई देती है। इसलिए प्रभु अब्राहम से कहते हैं, "यह ज़मीन तुम्हारी है," और ऐसा लगता है मानो परमेश्वर ने अब्राहम को ज़मीन का मालिकाना हक दे दिया हो। वह अभी भी इधर-उधर भटक रहा है, एक जगह से दूसरी जगह रह रहा है।

वास्तव में, यह अभी उसकी ज़मीन नहीं है, लेकिन प्रभु के दृष्टिकोण से यह कानूनी तौर पर उसकी ज़मीन है, क्योंकि याद रखें, वह अब्राहम से कहता है, वह उससे कहता है कि यह तुरंत नहीं होने वाला, क्योंकि एमोरियों का पाप अभी अपनी पूरी सीमा तक नहीं पहुँचा है, और इसलिए प्रभु न्यायी है। वह धैर्यवान है। वह एमोरियों के साथ वैसा करने को तैयार नहीं है जैसा वह बाद में यहोशू के ज़रिए उनके साथ करेगा।

वह उन्हें एक मौका देने वाला है, और वे, ज़ाहिर है, असफल हो जाते हैं, और इसलिए समय आ गया है कि प्रभु अपने लोगों को यह देश सौंप दें ताकि वे कनानियों को जड़ से उखाड़ फेंकें। दरअसल, प्रभु लैव्यव्यवस्था में कहते हैं, यह देश उन्हें उगल देगा, और फिर उसके बाद यौन प्रकृति के क्रूर, धिनौने पापों की एक सूची है जो प्रभु को उगलने पर मजबूर कर देगी, और वह इस्राएल को चेतावनी देते हैं, अगर तुम उनके नक्शेकदम पर चलोगे, तो यह तुम्हें उगल देगा, इसलिए यह प्रभु की भूमि है, और प्रभु, यह भूमि इसे बर्दाश्त नहीं कर सकती। नहीं, यह भूमि ऐसे लोगों को सहारा देने के लिए नहीं बनी है, और इसलिए प्रभु उन लोगों को हटा देंगे।

मानो धरती उन्हें उगल देगी, और इसलिए यह विजय पापी कनानियों पर न्याय है, लेकिन साथ ही, प्रभु अपना वादा भी पूरा कर रहे हैं। वह इस समय इस्राएल को ज़मीन दे रहे हैं। उन्होंने यह वादा इसहाक से, उत्पत्ति 26 में, दोहराया, और फिर याकूब से भी दोहराया जब याकूब ने आखिरकार इस वादे को स्वीकार करने का फैसला किया।

हमने पहले के एक व्याख्यान में भी इस बारे में बात की थी, और इस प्रकार यह याकूब की भूमि बन गई, जिसका नाम अब इज़राइल है, और यह लोगों की है, और इसलिए यहाँ प्रभु अपने लोगों को पुनर्स्थापित करने का वादा कर रहे हैं, और वह ऐसा दाऊद से किए गए अपने वादे के साथ कर रहे हैं। मैंने दाऊद से वादा किया था कि वह इस भूमि से शासन करेगा, और मैंने अब्राहम, इसहाक और याकूब और उनके वंशजों से वादा किया था कि वे इस भूमि पर कब्ज़ा करेंगे, और इस प्रकार प्रभु अपनी अटल वाचाओं को पूरा करने में लगे हैं, और साथ ही, वह मूसा के उस दर्शन को भी पूरा कर रहे हैं कि यह सब कैसे होगा। वे निर्वासन में जाने वाले हैं।

वे श्रापों का अनुभव करेंगे, लेकिन प्रभु उन्हें वापस लाएँगे, और मुझे लगता है कि इसे रूपक के रूप में प्रस्तुत करना और इसे चर्च या ऐसा कुछ बनाना, प्रभु को अपने वादे पूरे करते हुए देखने का एक कमज़ोर तरीका है, इसलिए मैं इस पर आगे नहीं बढ़ूँगा। यह कोई धर्मशास्त्र का व्याख्यान नहीं है। इसलिए हमने किताब पूरी कर ली है।

हमारे पास थोड़ा समय बचा है, और मुझे लगता है कि जब हम इतनी सारी बारीकियों और दोहराव वाली इस किताब को पढ़ते हैं, तो यह बहुत ज़रूरी है। मेरा मतलब है, मेरे कुछ यहूदी दोस्त, जब हम पैगम्बरों को देखते हैं, तो कहते हैं, ऐसा लगता है जैसे वह एक ही बात कह रहे हैं। वह लगातार अपनी बात दोहरा रहे हैं।

मैं कहता हूँ, नहीं, चलो ध्यान से पढ़ते हैं। इसे ध्यान से देखो। यह सिर्फ़ दोहराव नहीं है।

इसमें बारीकियाँ हैं, और विषय में विविधता है, इसलिए मुझे लगता है कि पीछे जाकर समीक्षा करना अच्छा होगा, और मैं उन सिद्धांतों की समीक्षा करना चाहूँगा जो हमने बताए हैं, क्योंकि मैंने उनमें से बहुत से आपके सामने रखे हैं, तो चलिए शुरुआत में वापस चलते हैं और किताब को फिर से पढ़ते हैं, और आपको याद होगा कि पहले अध्याय में और फिर दूसरे अध्याय में, प्रभु न्याय करने वाले हैं। वह उत्तरी राज्य, इस्राएल को लक्ष्य कर रहे हैं। प्रभु का दिन आ रहा है, और यह न्याय का दिन होगा, और इसलिए पहले सात भविष्यवाणियों में, हम देखते हैं कि जब राष्ट्र नैतिकता और आचार के उनके सार्वभौमिक मानकों का उल्लंघन करते हैं, तो परमेश्वर उन्हें जवाबदेह ठहराते हैं।

एक और चीज़ जो मैं भविष्यवक्ताओं के संदेश का सारांश देते समय करना पसंद करता हूँ, वह यह है कि जब आप बाइबल का कोई भी अंश पढ़ रहे हों, तो खुद से यह पूछना हमेशा अच्छा होता है कि इस पुस्तक या इस अंश से हम ईश्वर के बारे में क्या सीखते हैं? हम ईश्वर के बारे में क्या सीखते हैं? मुझे लगता है कि धर्मशास्त्र का अध्ययन करना ज़रूरी है। धर्मशास्त्र को इसी से विकसित होना चाहिए। यही बाइबिलीय धर्मशास्त्र है।

यहाँ विषय क्या है? हम परमेश्वर के बारे में क्या सीखते हैं? और फिर हम इसकी बारीकियों पर भी विचार कर सकते हैं। परमेश्वर राष्ट्रों के साथ कैसे संबंध रखता है, और परमेश्वर अपने वाचाबद्ध लोगों, इस्राएल के साथ कैसे संबंध रखता है? और इसलिए यदि आप आमोस का धर्मशास्त्र करने जा रहे हैं, और मैंने वास्तव में छोटे भविष्यवक्ताओं का धर्मशास्त्र किया है, जो 1992 में मूडी प्रेस द्वारा प्रकाशित एक पुस्तक में था। यह डीटीएस के प्रोफेसर थे जिन्होंने पुराने

नियम का बाइबिल धर्मशास्त्र और नए नियम का बाइबिल धर्मशास्त्र किया था, और मैंने एक पुस्तक के लिए छोटे भविष्यवक्ताओं पर काम किया था।

तो मुझे आमोस के धर्मशास्त्र पर विचार करने का कुछ अनुभव है, और इसलिए जब राष्ट्र नैतिकता और आचार के उसके सार्वभौमिक मानकों का उल्लंघन करते हैं, तो परमेश्वर उन्हें जवाबदेह ठहराता है। इसमें बहुत कुछ है। परमेश्वर पूरी दुनिया और सभी राष्ट्रों का परमेश्वर है।

आमोस के प्राचीन निकट पूर्वी संदर्भ में यह एक क्रांतिकारी कथन होता, क्योंकि हर राष्ट्र का अपना संरक्षक देवता होता है। लेकिन नहीं, ईश्वर इन सभी राष्ट्रों को उत्तरदायी ठहराता है। हमने इस बारे में बात की थी, और मुझे पता है कि मैं कुछ हद तक अपनी बात दोहरा रहा हूँ, लेकिन जब हम समीक्षा करेंगे, तो हमें यही करना होगा, और आपको याद होगा कि दोहराव ही सीखने की जननी है।

इसलिए परमेश्वर राष्ट्रों को जवाबदेह ठहराता है। वह सभी राष्ट्रों पर प्रभुता रखता है, और आमोस इसे बाद में और स्पष्ट करेगा, क्योंकि उसने पूरी दुनिया की रचना की है। इसलिए परमेश्वर की प्रभुता यहाँ निश्चित रूप से एक महत्वपूर्ण विषय है।

हम सीखते हैं कि परमेश्वर सर्वोच्च है, न्यायी है और अच्छा है। उसका एक मानक है, और उसने मूसा को यह मानक बताया था, "मैं चाहता हूँ कि तुम अपने साथी मनुष्यों में मेरी छवि का सम्मान करो, और जब इसका उल्लंघन होगा, तो वह लोगों को जवाबदेह ठहराएगा।" इसलिए वह सर्वोच्च है, और उसका एक नैतिक मानक है, जो दर्शाता है कि वह पवित्र और न्यायी है।

तो हम इस शुरुआती भाग से ही परमेश्वर के बारे में बहुत कुछ सीखते हैं। फिर हम अध्याय 2 के उत्तरार्ध में पहुँचे, जहाँ प्रभु इस्राएल पर ध्यान केंद्रित करते हैं, और हमने देखा कि परमेश्वर अपने लोगों पर, जिन पर उन्होंने अपनी इच्छा स्पष्ट रूप से प्रकट की है, एक उच्च नैतिक मानक स्थापित करते हैं। अतः परमेश्वर सभी राष्ट्रों पर प्रभुता रखता है, लेकिन उसने स्वयं को सभी राष्ट्रों पर एक समान रूप से प्रकट नहीं किया है।

उसने स्वयं को प्रकृति के माध्यम से प्रकट किया है। आप जानते हैं, भजन संहिता में यही कहा गया है, आप आकाश की ओर देख सकते हैं, और आप जानते हैं कि वहाँ है, और पौलुस रोमियों में भी यही कहता है, कि कोई भी अछूता नहीं है, क्योंकि परमेश्वर ने प्रकृति में अपनी शक्ति प्रकट की है, और इसलिए सभी राष्ट्रों को एकमात्र सच्चे परमेश्वर के बारे में कुछ न कुछ जानना चाहिए। और प्रकृति की सुंदरता को देखते हुए, अब प्रकृति के भीतर संघर्ष है, और यह एक ऐसी समस्या है जिससे आपको निपटना होगा, लेकिन यह ऐसा है, जो बाहर है वह इतना सुंदर है, नीला आकाश, हरी घास, हम इसे बस हल्के में लेते हैं।

इसमें एक डिज़ाइन और एक सुंदरता है जो सृष्टिकर्ता के स्वभाव के बारे में कुछ बताती है, जिसने हमारे आनंद के लिए ऐसा कुछ बनाया। लेकिन वह अपने लोगों पर एक उच्च नैतिक मानदंड रखता है, क्योंकि हम धर्मशास्त्र में सामान्य प्रकाशन, जैसे प्रकृति के माध्यम से, और विशेष प्रकाशन, जहाँ परमेश्वर आते हैं और अपने चुने हुए भविष्यवक्ताओं या किसी और के माध्यम से

लोगों से सीधे बात करते हैं, के बीच अंतर करते हैं, और यही उसने इस्राएल के लिए किया। उसने स्वयं को कुलपिताओं और फिर मूसा के सामने प्रकट किया, और इसलिए उन्हें बेहतर जानना चाहिए।

वे जानते हैं कि उसके नैतिक मानदंड क्या हैं, जो व्यवस्था में विस्तार से स्पष्ट रूप से उल्लिखित हैं। इसलिए परमेश्वर अपने लोगों पर, जिन पर उसने अपनी इच्छा स्पष्ट रूप से प्रकट की है, एक उच्च नैतिक मानदंड रखता है, और हमने इस तथ्य पर चर्चा की कि यह हमारे लिए एक चुनौती है। हम केवल उन भयानक मूर्तिपूजकों और उनके द्वारा किए गए भयानक कार्यों पर ही अपनी उँगलियाँ नहीं उठा सकते।

हो सकता है कि उनके पास हमारे जितना प्रकाश न हो। हो सकता है कि हम वो न कर रहे हों जो वे कर रहे हैं, लेकिन परमेश्वर की नज़र में, अगर हम उसके विरुद्ध विद्रोह कर रहे हैं, तो यह उनके द्वारा किए जा रहे कार्यों से भी बदतर हो सकता है। अध्याय 3, पद 1 और 2 इसी से संबंधित है, "जिसे बहुत दिया गया है, उससे बहुत अपेक्षा की जाती है।"

प्रभु अपने वाचा के लोगों से और भी ज़्यादा की अपेक्षा रखते हैं, और हम उनकी नई वाचा के लोग हैं। प्रभु हमसे और भी ज़्यादा की अपेक्षा रखते हैं। जैसे-जैसे हम अध्याय 3 में आगे बढ़ते हैं, तब भी जब परमेश्वर अपने लोगों से नाराज़ होते हैं और उन्हें अनुशासित करने के लिए तैयार होते हैं, वह पश्चाताप करने का अवसर प्रदान करते हैं।

याद रखिए, यही कारण और प्रभाव की बात है, और वह उन्हें यह दिखाने की कोशिश कर रहा है कि परमेश्वर पहले से ही आपके बीच सक्रिय है। आपको दीवार पर लिखी इबारत समझ आनी चाहिए। परमेश्वर आपको पश्चाताप करने का अवसर दे रहा है।

वह तुम्हें चेतावनी दे रहा है। वह एक नबी भेजता है। कम से कम इस्राएल में तो यही हुआ था।

अगर हम किसी तरह इसे अपने ऊपर लागू करना चाहें, तो उसने हमें अपना वचन दिया है, और जब हम बाइबल की सभी पुस्तकों को एक साथ रखते हैं, तो हम उसके मानकों और उसकी हमसे क्या अपेक्षाएँ हैं, यह समझ सकते हैं। और फिर, अध्याय 3 से आगे बढ़ते हुए अध्याय 4 में, जब परमेश्वर का वाचा समुदाय उसके सिद्धांतों पर चलने में विफल रहता है, अपनी धार्मिक परंपराओं में आत्मसंतुष्ट हो जाता है, और लालच से इस संसार के खिलौनों के पीछे भागता है—बाशान की गायों को याद कीजिए जो माँग कर रही हैं कि उनके पति उनके जीवन को पहले से भी अधिक आसान बना दें—यह ईश्वरीय अनुशासन को आमंत्रित करता है। इसलिए, जब परमेश्वर अपने वाचा के लोगों को उसके सिद्धांतों पर चलने में विफल करता है, तो वह उनका सामना करेगा।

यह कोई बेकार रिश्ता नहीं होगा। वह अपने लोगों का सामना करेगा, और वह आपको भी अपने लोगों में से एक मानकर सामना करेगा। वह अपने चर्च का सामना तब करेगा जब वे उसकी इच्छाओं और उसकी इच्छा के अनुसार काम नहीं करेंगे।

हम इसे प्रकाशितवाक्य के अध्याय 2 और 3 में देखते हैं। वह व्यक्तिगत रूप से हमारा सामना करेगा। जब हम उसके मार्ग पर नहीं चल रहे होंगे, तब वह हमारा ध्यान आकर्षित करेगा, और हम इसके लिए आभारी हो सकते हैं। यह ईश्वरीय अनुशासन है।

इब्रानियों, आप जानते हैं, कोई भी अच्छा पिता अपने बच्चों को अनुशासित करेगा। इसलिए, हमें इस अनुशासन के लिए तैयार रहना चाहिए। कभी-कभी यह समझना मुश्किल होता है कि यह ईश्वर का अनुशासन है या कुछ और। हाँ, हमें प्रार्थना और अवलोकन के माध्यम से इस पर काम करना होगा।

लेकिन फिर भी, परमेश्वर ऐसा करेगा—वह इस रिश्ते को बहुत गंभीरता से लेता है। और फिर, जैसा कि हम अध्याय 4 में आगे बढ़ते हैं, हमारा धैर्यवान परमेश्वर अपने लोगों को पश्चाताप की ओर लाने के लिए कभी-कभी कठोर कदम उठाता है। इसलिए, जैसे-जैसे वह हमारा ध्यान आकर्षित करने की कोशिश करता है, वह उस अनुशासन की तीव्रता को बढ़ा सकता है।

उसने इस्राएल के साथ भी ऐसा ही किया, और वे ध्यान ही नहीं दे रहे थे। इसलिए, उसने अंततः कहा, "ठीक है, मुझे तुम्हारे साथ और भी कठोरता से पेश आना होगा।" हम अध्याय 5 में पहुँच गए। परमेश्वर रीति-रिवाजों से ज़्यादा रिश्तों को प्राथमिकता देता है, और हम परमेश्वर के साथ अपने रिश्ते के बारे में ऊर्ध्वाधर रूप से और दूसरों के साथ अपने रिश्ते के बारे में क्षैतिज रूप से बात कर रहे हैं।

वह चाहता है कि हम इन रिश्तों की कद्र करें, और वह उन लोगों से खुश नहीं है जो धार्मिक गतिविधियों में शामिल होकर उसके नैतिक मानकों का उल्लंघन करते हैं। अगर आप मूर्तिपूजक हैं, तो ईश्वर के प्रति आपकी कोई भी धार्मिक गतिविधि उसे प्रभावित या प्रसन्न नहीं करेगी। और आप कहते हैं, मैं मूर्तियों की पूजा नहीं करता।

नहीं, पौलुस कहता है कि मूर्तियाँ लालच जैसी भी हो सकती हैं। कोई भी चीज़ जिसे आप परमेश्वर के स्थान पर रखते हैं, जो आपके लिए परमेश्वर से ज़्यादा महत्वपूर्ण है, जिसके लिए आप परमेश्वर से ज़्यादा जुनून रखते हैं, वह मूर्ति है। और अगर आप झूठे देवताओं की भी पूजा करते हैं, तो प्रभु आपकी पूजा स्वीकार नहीं करना चाहते।

वे यही कर रहे थे। और अगर आप अपने भाई-बहनों की उपेक्षा कर रहे हैं और दूसरों से वैसा प्रेम नहीं कर रहे हैं जैसा आपको करना चाहिए, तो वह आपके धार्मिक अनुष्ठान, आपकी धार्मिक गतिविधियों को नहीं चाहता। इसलिए, अध्याय 5 इस विषय पर वाकई बहुत अच्छा है, और हम इसे यशायाह 1 और भविष्यवक्ताओं की पुस्तकों में अन्य स्थानों पर भी देखते हैं।

तो, अब हम उस विषय पर आ गए हैं जो हमने आज इस विशेष व्याख्यान में पढ़ाया था, कल के बजाय। आप देख सकते हैं कि मैंने एक अलग शर्ट पहनी है। आज एक अलग दिन है।

आज बुधवार है। कल मंगलवार था। परमेश्वर अहंकार से घृणा करता है और घमंडियों का सक्रिय रूप से विरोध करता है।

हमने इसे अध्याय 6 में देखा था, और यह एक ऐसा विषय है जो पूरे पवित्रशास्त्र में कई जगहों पर दोहराया गया है। परमेश्वर आत्म-संतुष्टि और अहंकार से घृणा करता है क्योंकि ये बहुत सी नकारात्मक गतिविधियों और कार्यों को जन्म देते हैं। अध्याय 7 में, परमेश्वर के कठोर न्याय को समझने के लिए, यहीं पर दर्शन घटित होते हैं।

हमें वास्तविकता को उसके नज़रिए से देखना चाहिए। हम न्याय के पात्र पर पड़ने वाले परिणामों पर इतना ध्यान केंद्रित नहीं कर सकते। हमें इस बात पर ध्यान केंद्रित करना होगा कि परमेश्वर न्याय क्यों कर रहा है।

हमें इसे उसके नज़रिए से देखना होगा। हर चीज़ के हमेशा दो पहलू होते हैं। हमें परमेश्वर के पक्ष पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए, क्योंकि बाइबल में अक्सर वह हमें बताता है कि वह न्याय क्यों करने वाला है, और मुझे लगता है कि आमोस की किताब में भी यही बात है।

यह बिल्कुल स्पष्ट है। इसलिए, किसी भी अंश के संदर्भ से और पूरी बाइबल से परमेश्वर का दृष्टिकोण समझने की कोशिश करें। वह न्याय अवश्य आएगा, और अगले भाग में, जैसे-जैसे हम अध्याय 8 और अध्याय 9 में आगे बढ़ते हैं, इसे विभिन्न तरीकों से चित्रित किया गया है। परमेश्वर का न्याय दुखद रूप से कड़वा होता है, जैसे इकलौते बच्चे को खोना।

यह उचित है। आप इसी के हकदार हैं। इससे बचना असंभव है।

भगवान के साथ लुका-छिपी खेलकर जीतना नामुमकिन है। कोई भी बैल आज़ाद नहीं होता। वह तुम्हें पकड़ लेगा।

आप जहाँ भी जाएँगे, वह आपको ढूँढ़ लेगा, लेकिन परमेश्वर का न्याय विवेकपूर्ण है, और यह उत्साहजनक है। सभी पापियों का न्याय होगा। कभी-कभी ज़्यादातर लोग ऐसा ही करते हैं, लेकिन नूह और हबक्कूक को याद रखें।

यह विवेकशील है। परमेश्वर के पास अपनी छलनी है, और जब वह न्याय करेगा, तो वह पापियों को धर्मी लोगों से अलग करेगा, और अपने भविष्य के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए धर्मी लोगों का उपयोग करेगा। और फिर, जैसा कि हमने कुछ मिनट पहले देखा, वह अंतिम भाग, सुखद अंत।

परमेश्वर की अपनी प्रतिज्ञाओं के प्रति निष्ठा और अपने लोगों के प्रति उसकी प्रतिबद्धता। मैं दाऊद की वाचा, अब्राहम की वाचा की बात कर रहा हूँ, जो इस बात की गारंटी है कि इतिहास का अंत सुखद होगा, और उसके लोगों के लिए उसका आदर्श साकार होगा। और आमोस के अंतिम पदों में हम जो देखते हैं, कि परमेश्वर भविष्य में अपने लोगों के लिए क्या करने जा रहा है, वही वह शुरू से चाहता था।

वह चाहता था कि लोग उसकी आज्ञा मानें और उसका आशीर्वाद पाएँ। और कुछ लोग कहेंगे, "देखो, ईश्वर बहुत स्वार्थी है, प्रेम वगैरह की माँग करता है।" नहीं, उसने हमें इस तरह से रचा है,

उसने हमें इस तरह बनाया है कि अगर हमारा उसके साथ कोई रिश्ता नहीं है, तो हम संतुष्ट नहीं होंगे।

और आप कह सकते हैं, यह एक तरह का स्वार्थ है, वह हमें अपने जैसा बनाना चाहता है। नहीं, वह सृष्टिकर्ता है, वह सर्वगुण संपन्न है। इसलिए, उसका हमें एक खास तरह का इंसान बनाना प्रेम और कृपा का एक अद्भुत कार्य है, क्योंकि ऐसा होने पर हम सबसे ज़्यादा खुश होंगे।

मैं लोगों को परमेश्वर पर स्वार्थी होने का आरोप लगाते हुए सुनकर थक गया हूँ। नहीं, परमेश्वर चाहता है कि यह आदर्श संसार साकार हो। और आमोस के अंतिम अध्यायों में हम जो देखते हैं, वह साकार हो रहा है।

अब यह उनके वाचाबद्ध लोगों के लिए साकार हो रहा है, लेकिन जैसा कि हम पूरी बाइबल में पढ़ते हैं, हम जानते हैं कि प्रभु ने अपनी वाचा को इस्राएल से आगे, अन्यजातियों तक भी विस्तारित किया है। जैसा कि हम नए नियम में पढ़ते हैं, नई वाचा केवल इस्राएल के लिए नहीं है। यह केवल यहूदी लोगों के लिए नहीं है।

हम सभी को भी इससे लाभ होता है। और हम नए नियम में, प्रेरितों के काम की पुस्तक में, ऐसा होते हुए देखते हैं, जब सुसमाचार अन्यजातियों की दुनिया में जाता है, और उन्हें उपासकों के रूप में अपने साथ शामिल किया जाता है। और यीशु पहले से ही सुसमाचारों में, संकेत से भी बढ़कर, इस ओर संकेत कर रहे हैं, जब वे सिरियोफोनीकी स्त्री की तरह अन्यजातियों तक पहुँचते हैं, और कहते हैं, "मैंने इस्राएल में इस प्रकार का विश्वास नहीं देखा।"

और हाँ, आमोस के अंत में जो तस्वीर हम देखते हैं, वही हमारा भविष्य है। हम उस तरह के राज्य और दुनिया में रहेंगे जहाँ परमेश्वर का आशीर्वाद प्रचुर है, हम उसकी उपस्थिति का आनंद लेते हैं, और हमारे लिए उसका उद्देश्य पूरा होता है, ताकि हम हमेशा के लिए जी सकें और उसका आनंद ले सकें। तो, आमोस की पुस्तक का अंत सुखद है।

और मुझे उम्मीद है कि आप इस अध्ययन से यही सबक सीखेंगे। तो आइए प्रार्थना के साथ समापन करें। पिता, हम आपके वचन के लिए आपका धन्यवाद करते हैं।

हम इन प्राचीन भविष्यवक्ताओं के लिए आपका धन्यवाद करते हैं जिन्हें आपने चुना और जिनके माध्यम से आपने बात की। और हम आमोस के संदेश के लिए भी आपका धन्यवाद करते हैं। इस पुस्तक में हम आपके बारे में बहुत कुछ सीखते हैं, आप कैसे दुनिया पर राज करते हैं और आप कौन हैं, एक न्यायप्रिय, पवित्र परमेश्वर, धर्मी, और साथ ही एक दयालु परमेश्वर, जो पतित पापियों को छुड़ाने के लिए तत्पर हैं।

और हम आपसे विनती करते हैं कि हम बाहर जाएँ और इन सिद्धांतों को अमल में लाएँ, कि हम उस मार्ग पर चलें जो आपने हमारे लिए निर्धारित किया है, जो हमारे लिए मसीह के समान बनना है, और कि हम वचन पर चलने वाले बनें, सिर्फ सुनने वाले नहीं। इसलिए, हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा आपने हमारे लिए जो किया है उसके लिए धन्यवाद। इस अँधेरी दुनिया में ज्योति बनने, खुशखबरी, सुसमाचार बाँटने और लोगों को यह दिखाने में हमारी मदद करें कि आपने इस

दुनिया के लिए क्या योजना बनाई है , और उन्हें यीशु के द्वारा और अपने पापों के पश्चाताप और स्वीकारोक्ति के माध्यम से उस संकरे मार्ग में प्रवेश करने का निमंत्रण दें, जो इस राज्य की ओर ले जाता है। और हम यीशु के नाम से प्रार्थना करते हैं। आमीन।

यह डॉ. रॉबर्ट चिशोल्म और आमोस की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। आमोस: सिंह दहाड़ा है, कौन नहीं डरेगा? यह सत्र 8 है, आमोस 9:7-10, छलनी में हिलाया गया। आमोस 9:11-15, एक सुखद अंत—लहू और लोहा ऊपर आता है लैवेंडर और गुलाब।